2 अप्रैल 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 1 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

शिखरजी में हुये स्वर्ण जयंती शिविर में सहयोग करने वाले महाविद्यालय के विद्यार्थियों का -

सम्मान समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 20 मार्च को टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों का सम्मान किया गया, जिन्होंने शिखरजी में हुये स्वर्ण जयन्ती शिविर में सहयोग प्रदान किया था।

समारोह के अन्तर्गत तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री योगेन्द्र दुर्लभजी (सैक्रेटरी-संतोकबा दुर्लभजी मेमोरियल हॉस्पिटल), श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि महानुभाव मंचासीन थे।

कार्यक्रम का मंगलाचरण श्री रेमांशु जैन ने एवं स्वागत भाषण श्री परमात्म प्रकाशजी ने किया। श्री योगेन्द्रजी का परिचय श्री सर्वज्ञ भारिल्ल ने दिया।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी एवं श्री योगेन्द्रजी के उद्बोधन का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

S.P. भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ रामाशाह मंदिर में आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं श्री समयसार महामंडल विधान के अवसर पर दिनांक 11 मार्च को श्री शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल जयपुर द्वारा 'प्रकृति का नियम - कण-कण की स्वतंत्रता' विषय पर 2500 साधर्मियों की उपस्थिति में आकर्षक व्याख्यान हुआ, जिसमें जैन सिद्धांतों के आधार से समस्त विश्व को जीव और अजीव - इन दो भागों में विभाजित किया। उन्होंने बताया कि किसी भी व्यक्ति का शरीर अजीव है और आत्मा जीव है। मृत्यु होने पर आत्मा निकल जाती है और निर्जीव शरीर यहीं पड़ा रह जाता है, इसी से सिद्ध होता है कि शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं। कोई भी जीव किसी के आधीन नहीं; अपितु पूर्णतया स्वतंत्र है।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विष्णु प्रसादजी शुक्ला, श्री प्रदीपजी कासलीवाल, श्री टी.के. बैद शाह, श्री डी.के. जैन साव, श्री अनिल जैन 'जैनको' आदि महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम में ढाईद्वीप जिनायतन का संपूर्ण परिचय भी दिया गया।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ जनता कॉलोनी में पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 5 से 12 मार्च तक कल्पद्रुम महामंडल विधान का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें सैंकड़ों साधर्मी बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया। विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर द्वारा पण्डित विजयजी एवं पण्डित विकेशजी के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम के मुख्य समन्वयक श्री गौरवजी जैन, जनता कॉलोनी थे।

इस अवसर पर बनी हुई समवशरण की रचना में कमलासन पर विराजमान चार प्रतिमाएं आकर्षण का केन्द्र रहीं। ज्ञातव्य है कि ये प्रतिमाएं मुल्तान-पाकिस्तान से देश विभाजन के समय आई हैं, जो वर्तमान में आदर्श नगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में विराजमान है।

इस प्रसंग पर प्रतिदिन सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं डॉ. संजीवजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि दो दिन श्री हर्षवर्धनजी जैन द्वारा विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसकी उपस्थित जनसमुदाय ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

आयोजन में जनता कॉलोनी जैनसभा, अ.भा. जैन युवा महिला फैडरेशन एवं स्वाध्याय मंडल के सक्रिय सहयोग सहित पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ एवं श्री परितोषजी जैन का अपूर्व सहयोग रहा।

- सुधीर गंगवाल, अध्यक्ष-जैनसभा, जनता कॉलोनी

(2) अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के अन्तर्गत निर्मित श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम मंदिर में प्रथम बार श्री नियमसार महामंडल विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा प्रातःकाल नियमसार ग्रन्थ की 187 गाथाओं पर विस्तृत विवेचन एवं सायंकाल पुरानी मण्डी स्थित श्री सीमंधर जिनालय में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के कार्य ब्र.श्रेणिकजी द्वारा पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री जयपुर के सहयोग से किये गये।

- प्रकाश पाण्ड्या, अजमेर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बइ
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यद्यपि अज्जू और अन्नू अपनी-अपनी करनी पर पछता रहे थे। पर 'फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' वाली कहावत उनके मानस पटल पर बार-बार आ-जा रही थी। उनकी अन्तरात्मा से ऐसी आवाज आ रही थी कि लोगों से चिल्ला-चिल्लाकर कहें कि -'हम जैसी भूल भविष्य में कोई न करे।'

एक बार तो उन्होंने अपनी हार्दिक इच्छा जाहिर करते हुए यह कहा था कि आप हमारा उदाहरण प्रस्तुत करते हुए दुनिया को शराब और सिगरेट के दुष्परिणामों की घोषणा करते हुए ढिंढोरा पिटवा दें, ताकि भविष्य में कोई सिगरेट व शराब पीना तो दूर, उन्हें छूना भी पाप समझे।

अन्नू और अज्जू को जब अस्पताल से छुट्टी मिली तो उन्हें बड़ी राहत-सी महसूस हुई। अब तो उनकी दिनचर्या ही बदल चुकी थी। उनके आचरण से ऐसा लगता ही नहीं था कि ये लोग कभी दुर्व्यसनों के शिकार भी थे।

सुनीता और सरला भी अब विज्ञान और विद्या के सम्पर्क में आने से अपने को पूर्ण सुरक्षित और सुखी अनुभव कर रही थी। अब वे बराबर मंदिर आते, दर्शन-पूजन करते, प्रवचन में भी अपनी शक्ति के अनुसार बैठ जाते और प्रवचन में आये तत्त्वज्ञान की बातों को अपने में बिठाने का प्रयत्न करते।

उनके देह का उपचार तो यथाशक्य चल ही रहा था, साथ ही अपने साधर्मी भाइयों के साथ बैठकर विज्ञान ने उन चारों ही प्राणियों को अधिकतम धर्मलाभ पहुँचाने की भी एक व्यवस्थित योजना बना ली थी। उसमें यह तय किया गया था कि कौन/कब/कितने समय तक उनके पास बैठकर उन्हें तत्त्वज्ञान का लाभ देगा। वैराग्यमय वातावरण बनाने के लिए शान्तरस से भरपूर संगीतमय आध्यात्मिक भजन, वैराग्य भावना, समाधिमरण, शुद्धात्म शतक, छहढाला आदि सुनाने की व्यवस्था करेगा। ताकि उनके परिणाम निर्मल हों, दुर्व्यसनों के कारण उत्पन्न हुई आत्मग्लानि दूर हो और आत्मानुभूति प्राप्त करने का सुअवसर मिल सके।

साधर्मी वात्सल्य कहते ही उसे हैं, जिसमें नि:स्वार्थ भाव से अपने साधर्मी भाइयों को, मित्रों को और कुटुम्ब-परिवारों को सन्मार्ग में लगाने के लिए अपना सम्पूर्ण समर्पण कर दे। इससे बढकर अन्य कोई पुण्य का कार्य नहीं हो सकता।

यह अन्नू और अज्जू के महान पुण्य का उदय ही समझना चाहिए कि उन्हें विज्ञान जैसा हितैषी मित्र मिल गया। विज्ञान के सम्पर्क में आते ही विज्ञान ने उनके रोग का उपचार तो कराया ही, साथ ही प्रतिदिन सुबह-शाम उनके घर जाकर उन्हें और उनकी पत्नी सरला और सुनीता को भी णमोकार मंत्र से प्रारम्भ करके चौबीस तीर्थंकरों के नाम, पंचपरमेष्ठी एवं देव-शास्त्र-गुरु का स्वरूप, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र, सात तत्त्व, भेदविज्ञान, निमित्त-उपादान, कर्मसिद्धान्त, क्रमबद्धपर्याय और सर्वज्ञता आदि का सामान्य ज्ञान भी कराया और सदाचारी जीवन जीने की प्रेरणा दी।

इस तरह विज्ञान ने अपने साथियों के सहयोग से उनके जीवन को धार्मिक वातावरण के रंग में रंग दिया।

वातावरण बदलने से उन चारों ही प्राणियों के परिणामों में काफी परिवर्तन हो रहा था, अब अज्जू और अन्नू का मन आत्मग्लानि से भर आया था, वे अपनी भूल पर पश्चाताप तो कर ही रहे थे, साथ ही धर्मलाभ का उन्हें बहुत हर्ष था।

विज्ञान ने उन्हें समझाया -''क्या जीवनभर पश्चाताप ही करते रहोगे ? यदि गलतियों पर पछताते ही रहोगे तो आत्मा का अनुभव कब करोगे ? पछतावे का महत्व उस सीमा तक ही होता है, जब तक हम उन दोषों की दलदल से बाहर न निकल जायें, अब तो तुम बहुत आगे बढ गये हो।

अत: अब तुम भूत को भूल जाओ, भविष्य की भी चिन्ता छोड़ दो, अब तो तुम केवल वर्तमान को संभालो, भविष्य तो अपने आप संभल जायेगा। अपने आत्मा को जानो, उसे ही अच्छी तरह पहचानो; उसी में जम जाओ, उसी में समा जाओ, तुम्हें सब पापों से छुटकारा मिल जायेगा और तुम सदा के लिए सुखी हो जाओगे।''

(क्रमश:)

श्री समयसार विधान एवं सप्तम आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सानन्द संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट (ढाईद्वीप जिनायतन) एवं श्री पंच लश्करी गोठ ट्रस्ट रामाशाहजी मंदिर मल्हारगंज के संयुक्त तत्त्वावधान में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित श्री समयसार विधान एवं सप्तम आध्यात्मिक शिक्षण शिविर दिनांक 5 से 12 मार्च तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा श्री समयसार विधान पर मार्मिक एवं भावपूर्ण प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में स्थानीय विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी द्वारा प्रवचन तथा रात्रि में पण्डित अनिलजी धवल भोपाल व स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। शिविर में लगभग 2500 साधर्मियों ने लाभ लिया।

आओ पढें जैनधर्म

जिनमती : अजी ! सुनते हो।

ज्ञानचन्द : क्या बात है भागवान ?

जिनमती : अपना ज्ञायक 10वीं में आ गया है। उसके भविष्य के बारे में सोचा है ? क्या करेगा, क्या पढेगा ?

ज्ञानचन्द : सोचना क्या है ? इतना अच्छा जमा-जमाया व्यापार है, उसे ही आगे बढायेगा और क्या। रही बात पढाई की तो उसे जो भी पढना हो पढे।

जिनमती : जो पढना हो क्यों ? हम भी तो उसके माँ-बाप हैं, हमें नहीं सोचना चाहिये कि क्या पढे क्या नहीं ?

ज्ञानचन्द : ठीक है ना, उसकी बुद्धि भी अच्छी है, ए ग्रेड से पास होता है। इसलिये गणित में रुचि हो तो साइंस मैथ्स पढ ले या कॉमर्स पढेगा तो व्यापार में काम आएगी, नहीं तो बी.ए. कर ले।

जिनमती : भई वाह ! जब उसे पढकर भी घर का व्यापार ही सम्हालना है तो विज्ञान पढाने से क्या फायदा ? नौकरी तो करानी नहीं है।

ज्ञानचन्द : तो क्या करें ?

जिनमती : मेरी मानो तो जयपुर से शास्त्री करा दो।

ज्ञानचन्द : अच्छा तो पण्डितजी बनाना चाहती हो; पर वहाँ पढेगा क्या ?

जिनमती : अजी ! तुम्हें कुछ नहीं मालूम। जैसे गणित से बी.एससी., कॉमर्स से बी.कॉम. और आर्ट्स से बी.ए. होता है वैसे ही जयपुर में जैनदर्शन में संस्कृत से शास्त्री होती है। ये डिग्री विश्वविद्यालय की ग्रेजुएट डिग्री है, जिसे सभी जगह मान्यता प्राप्त है।

ज्ञानचन्द : ऐसा है ! मैं तो सोचता था कि जयपुर में तो मात्र पण्डित बनते हैं, धर्म पढते हैं।

जिनमती : हाँ पढते तो जैनधर्म की किताबें ही हैं; लेकिन उस पढाई को सरकार से ग्रेजुएट डिग्री की मान्यता प्राप्त है।

ज्ञानचन्द : शास्त्री नहीं कराना; यहीं रहकर बी.एससी. या बी.कॉम. कर ले या इंजीनियर/डॉक्टर की पढाई पढ ले। आजकल के बच्चे भी तो सब यही कर रहे हैं।

जिनमती : जब तुम्हें उससे व्यापार ही कराना है तो डॉक्टर/इंजीनियर की पढाई पढाकर भी क्या फायदा ? बी.एससी./बी.कॉम. करके भी क्या मिल जायेगा ?

ज्ञानचन्द : तो शास्त्री करके कौनसा खजाना मिल जायेगा ?

जिनमती : हाँ, खजाना ही मिल जायेगा, निहाल हो जायेगा हमारा बेटा।

ज्ञानचन्द : वो कैसे ?

जिनमती : सुनो ! ज्ञायक जयपुर जाकर शास्त्री करेगा तो (1) उसके धर्म के संस्कार बने रहेंगे, (2) बड़ा होकर आजकल के बच्चों जैसा व्यसनी नहीं बनेगा, (3) कुसंगति में नहीं जायेगा, (4) हमें, तुम्हें और पूरे परिवार को धर्म के मार्ग पर लगे रहने की प्रेरणा देता रहेगा। (5) हमारे समाधि-मरण में सहयोगी बनेगा, (6) सदाचारी होगा तो समाज में भी हमारा नाम ऊँचा ही उठायेगा, (7) पुण्य-पाप के परिणामों की पहिचान हो जायेगी तो व्यापार में भी न्याय-नीति रखेगा, (8) तत्त्वज्ञान होने से उसके खुद के जीवन में भी सुख/शान्ति/निराकुलता रहेगी, (9) छात्रावास में गुरुजनों के साथ रहने से भले-बुरे की समझ आ जाती है, (10) अपना काम खुद करने से आत्मविश्वास आ जाता है और न जाने कितने सारे फायदे हैं, वहाँ जाने के।

ज्ञानचन्द : क्या बात कर रही हो ? इतना सब तुम्हें कैसे पता ?

जिनमती : मैं जयपुर शिविर में गयी थी। वहाँ के लड़कों को देखा और इस बार दशलक्षण में जयपुर से शास्त्रीजी आये थे, उनसे यह सब पता किया है।

ज्ञानचन्द : सुनी-सुनायी बातों का क्या भरोसा ?

जिनमती : सुनी-सुनायी बातों को मत मानो, आप स्वयं जयपुर जाकर देख आओ, आखिर बच्चे की जिन्दगी का सवाल है, नहीं तो...

ज्ञानचन्द : नहीं तो ...

जिनमती : 21 मई से 7 जून तक खनियांधाना (म.प्र.) में उन्हीं का शिविर लग रहा है, वहाँ सब आयेंगे, हम चलते हैं, ज्ञायक को भी ले चलते हैं। सब अपनी आँखों से देख लेंगे, पता कर लेंगे।

ज्ञानचन्द : हाँ ये ठीक है; पर ज्ञायक का मन क्या है ?

जिनमती : वो तो बालक है, जिस तरफ मोड़ दोगे, मुड़ जायेगा। उसके जीवन के लिये क्या अच्छा है, यह तो हमें ही सोचना पड़ेगा। वैसे उसको धर्म की अच्छी रुचि है।

ज्ञानचन्द : तुम ठीक कहती हो, मैं आज ही जयपुर बात कर सब पता करता हूँ। ●

भक्तामर मंडल विधान सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जनता कॉलोनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में ऋषभदेव जयंती के अवसर पर दिनांक 22 मार्च को अ.भा. जैन युवा महिला फैडरेशन के तत्त्वावधान में भक्तामर मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में संपन्न हुये। कार्यक्रम का संयोजन फैडरेशन की अध्यक्षा श्रीमती सुनीताजी कासलीवाल द्वारा श्रीमती नीलमजी एवं संस्कृतिजी गोधा के सहयोग से हुआ।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 9 अप्रैल	आत्मसाधना केन्द्र दिल्ली	कन्या निकेतन का दीक्षान्त समारोह एवं उपकार दिवस
24 से 28 अप्रैल	देवलाली-नासिक	गुरुदेवश्री जयन्ती
21 मई से 7 जून	खनियांधाना (म.प्र.)	प्रशिक्षण शिविर
9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ

(विदेश का विस्तृत कार्यक्रम पृष्ठ संख्या 8 पर दिया गया है।)

16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम-अहमदाबाद	गुरुमंथनवाणी शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

स्वर्ण जयंती के मायने (22)
तत्त्वप्रचार : वर्तमान चुनौतियाँ और उपाय

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पशुओं के जीवन में मात्र तीन ही लक्ष्य होते हैं – आहार जुटाना, बच्चे पैदा करना और अपनी जीवनरक्षा। मात्र इन्हीं में व्यस्त रहते हुए वे अपना जीवन गुजार देते हैं।

पशुओं के विपरीत मानव अपने लिये बड़े–बड़े ख्वाब देखता है, योजनायें बनाता है, डींगें हाँकता है; पर इन सबके बावजूद अंतिम निष्कर्ष यही होता है कि वह भी जीवनभर 'लोंन–तेल–लकड़ी' जुटाने की चिंताओं, योजनाओं और प्रयासों में जुटे रहकर अंतत: दम तोड़ देता है, इन सबसे ऊपर उठ ही नहीं पाता है।

उक्त तथ्यों पर गौर करें तो पायेंगे कि आखिर पशुओं में और हममें फर्क ही क्या रहा ?

आखिर ऐसा होता क्यों है ?

बस इसलिये कि **हमारे पास संसाधन व समय सीमित है और हमारी आकांक्षाएं अनन्त हैं; इसलिये जीवन के लिये अपरिहार्य आहार, निद्रा और मैथुन जैसी क्रियाएं तो स्वत: ही सम्पन्न हो जाती हैं, हमारे जीवन के समय में से अपना हिस्सा बलात छीन लेती है और हमारी अन्य आकांक्षाएं बस एक दूसरे के साथ संघर्ष में उलझी हुई व्यर्थ ही वक्त गंवा देती है, ''यह भी कर लूं, यह भी चाहिये' के फेर में हम कुछ भी नहीं कर पाते हैं।**

यदि हमें जीवन में कुछ उपलब्ध करना है, अर्थात् (मोक्षमार्ग में) हम जहाँ खड़े हैं, उससे कुछ आगे बढना है तो हमें क्या करना होगा ?

ठीक वही जो हम बाजार में खरीददारी करते वक्त करते हैं –

बाजार में उपलब्ध अनन्त वस्तुओं में से मात्र उन्हीं वस्तुओं पर ध्यान देते हैं, जिनकी हमें आवश्यकता है, हम उनके विस्तार में जाते हैं, उन्हें चुनते हैं, उनकी गुणवत्ता परखते हैं, कीमत का आकलन करते हैं और लेकर चल पड़ते हैं। अनावश्यक अन्य वस्तुओं में उलझकर अपना समय, शक्ति और पैसा व्यर्थ नहीं गंवाते हैं।

अपने जीवन के साथ भी हमें यही करना होगा।

दुनिया में उपलब्ध अनन्त वस्तुओं और संभावनाओं में न उलझते हुए, उनमें अपना वक्त और श्रम बर्बाद न करते हुए, अपने लक्ष्य (साध्य) तय करके मात्र उनकी सिद्धि की दिशा में आगे बढना चाहिये, तभी हम अपने इस जीवन में कुछ उपलब्ध कर पायेंगे।

यदि हमने आत्मकल्याण और तत्त्वप्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य चुना है, स्वीकार किया है तो हमें क्या करना होगा ?

हमें निम्न बिन्दुओं पर कार्य करना होगा –

– उपयोगिता भासित करना

– चाह पैदा करना

– साधन उपलब्ध करवाना

– समय निकालना

– भाषा की बाधा दूर करना

– विषय प्रवेश

– उच्च शिक्षा

● **उपयोगिता भासित करना –**

इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का यह हिस्सा सबसे महत्वपूर्ण व सबसे कठिन है। एक बार यह हो गया तो समझ लीजिये हमारा 90 प्रतिशत काम तो हो गया। **इसके बाद यदि हम अपनी ओर से कुछ भी न करें तब भी सामने वाला वह पात्र जीव किसी न किसी तरह अपना मार्ग खोज ही लेगा।**

जिस प्रकार एक डॉक्टर के लिये सबसे महत्वपूर्ण काम यह है कि वह अपने पास आये हुए मरीज के जीवनघातक रोग (जैसे हृदय रोग, कैंसर आदि) का निदान करके उसे यह विश्वास दिला दे कि उसे यही रोग है और इसका उपचार संभव है। इससे आगे यदि वह स्वयं कुछ भी न कर पाये **तब भी जीवन का लोभी यह मरीज अपना आगे का मार्ग स्वयं ही खोज लेगा।**

सबसे कठिन कार्य तो उस अच्छे–भले, चलते–फिरते हुए, अपने नित्यक्रम के कार्य भली–भांति सम्पन्न करते हुए व्यक्ति को यह अहसास दिलाकर कि वह स्वस्थ नहीं बीमार है, किसी डॉक्टर के पास ले जाना है। **यदि वह अपने आप को बीमार नहीं मानेगा तो किसी डॉक्टर के पास जायेगा ही क्यों, उसकी बात सुनेगा–मानेगा ही क्यों ?**

इसीलिये तो अपने आपको स्वस्थ मानने वाले लोगों को उनके रोग का ज्ञान करवाने के लिये सरकार भी नि:शुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन करती है। **एक बार किसी को अपने रोगी होने का अहसास (ज्ञान) हो जाये तब वह रोग को दूर करने के उपाय तो स्वयं ही करेगा।**

ठीक इसी प्रकार **संसार में रचे–पचे इस जीव को यह अहसास करवाना ही सबसे कठिन काम है कि 'तू महाभयंकर भवव्याधि से पीड़ित है और इसका उपचार संभव भी है'** क्योंकि वह आपके पास आयेगा ही नहीं, आपकी बात सुनेगा और मानेगा ही नहीं, तब आप यह कार्य करेंगे कैसे ?

अपने रोग की स्वीकृति के बाद तो वह स्वयं उस मरीज की भांति सक्षम डॉक्टर (ज्ञानी गुरु) की खोज करेगा, उसका अपॉइन्टमेन्ट लेगा, उसकी महंगी फीस (समय का समर्पण) भी चुकाएगा और अत्यन्त विनम्रतापूर्वक, ध्यान से उसकी बात सुनकर उसके बतलाये हुए उपचार का अनुसरण करेगा।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हमें यही काम सबसे बड़ी प्राथमिकता के साथ, सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से हर गाँव–गली–मौहल्ले में करना होगा, हर जन–जन तक पहुंचाना होगा।

● **चाह पैदा करना –**

इस तथ्य का समझपूर्वक अहसास हो जाने पर कि **संसार एकांतरूप**

से मात्र दु:ख ही है और इन दु:खों से छूटकर सम्पूर्ण सुखी होने का एकमात्र उपाय मात्र तत्त्व–अभ्यास ही है, 'प्राप्त पर्याय में मगन' इस जीव को **वर्तमान संयोगों की निरर्थकता और नश्वरता का ज्ञान और अहसास होगा, सुखाभासों और संभावित सुखों की कल्पना में डूबते–उतरते इन दु:खी संसारी जीवों को सुख पाने के मार्ग में उनकी निरर्थकता का अहसास होगा, उन्हें सुख के सच्चे स्वरूप का परिचय होगा तब वे स्वत: ही इस मार्ग पर चलने को प्रेरित होंगे।**

शास्त्रों में भी मात्र इसी उद्देश्य से संसार के दु:खों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

जब हम संसार में व्याप्त एकांत दु:खों को जानकर उनसे विमुख होंगे व सच्चे शाश्वत सुख का स्वरूप समझकर उसे प्राप्त करने के लिये दृढसंकल्पित होंगे व हमें समझ में आयेगा कि उस सच्चे सुख को पाने का एकमात्र उपाय तत्त्वज्ञान है तभी हमें इस तत्त्वज्ञान की उपयोगिता भासित होगी और हम इस ओर प्रवृत्त होंगे।

तत्त्वप्रचार के लोभी हम सभी लोगों के सामने आज यह चुनौती है कि येन–केन–प्रकारेण हम यह कार्य करने में सफल हों। **(क्रमश:)**

शास्त्रीत्व का गर्व

मुझे गर्व है अपने आप पर कि मैंने शास्त्री किया। मुझे वो सब मिला, जिसकी कल्पना मैं दिवा स्वप्न में भी नहीं कर सकता था।

मुझे इस दु:खद पंचम काल में जैनधर्म के साथ कुन्दकुन्दादि संतों के परमागम मिले, उनमें से अध्यात्मरूपी अमृत को निकालकर पिलाने वाले पूज्य गुरुदेवश्री, उस अमृत को देश–विदेश में पहुंचाने वाले गुरु डॉ. भारिल्ल और बड़े दादा मिले, टोडरमल स्मारक जैसी बगिया मिली और उसमें मुझ जैसे चमन को खिलाने वाले अन्नाजी, अभयजी और शांतिजी जैसे बागवान मिले।

उनके द्वारा वस्तु–स्वातंत्र्य, अनेकान्त–स्याद्वाद व क्रमबद्धपर्याय आदि सिद्धांत जैसा माल मिला और उसके प्रचार हेतु मार्केट मिला।

मुझे कोई भी नहीं जानता था, आज हजारों लोग जानते हैं। जहाँ जाता हूँ, वहाँ सर्व सुविधाएं ससम्मान उपलब्ध हो जाती हैं।

मैंने रुचिपूर्वक अध्ययन किया, तभी तो मात्र जैन समाज ही नहीं, मेरे संस्कारों से प्रभावित जैनेतर सम्प्रदाय भी मुझे सम्मान की दृष्टि से देखता है। ये मेरा निजी घमंड नहीं, किन्तु शास्त्रीत्व का गर्व है।

और हाँ इस संसार में आशा और अपेक्षाओं का गड्ढा तो असीम है, जो कभी भी नहीं भर सकता; किन्तु उससे भी अनन्त सामर्थ्य स्वयं में है, उसी को पहिचानने का प्रयास जारी है।

अनन्त उपकार हैं, उन संस्थाओं के, जिन्होंने मुझ जैसे अल्पज्ञों में सर्वज्ञता के दर्शन कराने में निमित्तभूत शास्त्री करने का मार्ग प्रशस्त कराकर जगत का उपकार कर रहे हैं –

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर
2. ध्रुवधाम महाविद्यालय, बांसवाड़ा
3. धरसेन महाविद्यालय, कोटा
4. शाश्वतधाम, उदयपुर

– अनुमोदक : डॉ. प्रवीणकुमार शास्त्री, बांसवाड़ा

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा. जैन युवा फैडरेशन, खनियांधाना द्वारा आयोजित

51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2017 से 7 जून 2017 तक

- आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के भवतापहारी सी.डी. प्रवचन का प्रसारण।
- डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना आदि अनेक आत्मार्थी विद्वानों का प्रवचन, कक्षाओं के माध्यम से भरपूर लाभ।
- पाठशाला के अध्यापकों को बालबोध पाठमालायें एवं वीतराग–विज्ञान पाठमालाओं के अध्यापन हेतु विशेष प्रशिक्षण।
- देशभर के अलग–अलग प्रान्तों से पधार रहे साधर्मीजनों का मेला।
- श्री टोडरमल सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु अपूर्व अवसर।
- बालकों हेतु डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा विशेष कक्षायें।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र –

(1) ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन–0141–2705581, 2707458; Email - ptstjaipur@yahoo.com
(2) श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर, चेतनबाग, खनियांधाना, जिला–शिवपुरी 473990 (म.प्र.)
मोबाइल – 09575305898 (सोमिल शास्त्री), 09644122018 (आकाश शास्त्री)

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया द्वारा –

खनियांधाना में बालकों हेतु विशेष कक्षायें

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित 51वें वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर खनियांधाना (म.प्र.) में दिनांक 21 मई से 7 जून 2017 तक बाल मनोविज्ञान की विशेषज्ञा एवं विविध बाल साहित्य की रचयिता डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई द्वारा बालकों के लिये विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। अधिक से अधिक बालक इस अवसर का लाभ लेवें।

मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष

अध्ययनहेतु प्रश्नोत्तर

नोट :- पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष के अन्तर्गत मोक्षमार्गप्रकाशक स्वाध्याय वर्ष का संचालन किया जा रहा है। इस क्रम में आठवें अध्याय के प्रश्नोत्तर प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : चारों अनुयोगों की आठवें अधिकार के अनुसार परिभाषा दीजिये।

उत्तर : तीर्थंकर चक्रवर्ती आदि महान पुरुषों के चरित्र का जिसमें निरूपण किया हो वह **प्रथमानुयोग** है। गुणस्थानमार्गणादिरूप जीव का व कर्मों का व त्रिलोकादिक का जिसमें निरूपण हो वह **करणानुयोग** है। गृहस्थ-मुनि के धर्म आचरण करने का जिसमें निरूपण हो वह **चरणानुयोग** है तथा षट्द्रव्य, सप्ततत्त्वादिक का व स्व-पर भेदविज्ञानादिक का जिसमें निरूपण हो वह **द्रव्यानुयोग** है।

प्रश्न : चारों अनुयोगों का प्रयोजन स्पष्ट कीजिये।

उत्तर : प्रथमानुयोग में तो संसार की विचित्रता, पुण्य-पाप का फल, महन्त पुरुषों की प्रवृत्ति इत्यादि निरूपण से जीवों को धर्म में लगाया है। करणानुयोग में जीवों के व कर्मों के विशेष तथा त्रिलोकादिक की रचना निरूपित करके जीवों को धर्म में लगाया है। चरणानुयोग में नानाप्रकार धर्म के साधन निरूपित करके जीवों को धर्म में लगाते हैं। द्रव्यानुयोग में द्रव्यों का व तत्त्वों का निरूपण करके जीवों को धर्म में लगाते हैं।

इस प्रकार चारों अनुयोगों का प्रयोजन जीवों को धर्म में लगाना है।

प्रश्न : प्रथमानुयोग अज्ञानी (अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टि) जीव को किस प्रकार प्रयोजनवान है ?

उत्तर : तुच्छबुद्धि जीव सूक्ष्म निरूपण को नहीं पहिचानते, लौकिक कथाओं को जानते हैं, वहाँ उनका उपयोग लगता है तथा प्रथमानुयोग में लौकिक प्रवृत्तिरूप ही निरूपण होने से उसे वे भली-भांति समझ जाते हैं और प्रयोजन जहाँ-तहाँ पाप को छुड़ाकर धर्म में लगाने का प्रगट करते हैं, इसलिये वे जीव कथाओं के लालच से तो उन्हें पढते-सुनते हैं और फिर पाप को बुरा, धर्म को भला जानकर धर्म में रुचिवंत होते हैं।

इसप्रकार प्रथमानुयोग अज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : प्रथमानुयोग अज्ञानी जीवों को ही नहीं; अपितु तत्त्वज्ञानी जीवों के लिये भी प्रयोजनवान है, कैसे ?

उत्तर : जिन जीवों के तत्त्वज्ञान हुआ हो, पश्चात् इस प्रथमानुयोग को पढे-सुनें तो उन्हें यह उसके उदाहरणरूप भासित होता है। जैसे - जीव अनादिनिधन है, शरीरादिक संयोगी पदार्थ हैं, ऐसा यह जानता था। पुराणों में जीवों के भवान्तर निरूपित किये हैं, वे उस जानने के उदाहरण हुए। यहाँ उदाहरण का अर्थ यह है कि जिसप्रकार जानता था, उसी प्रकार वहाँ किसी जीव के अवस्था हुई, इसलिये यह उस जानने की साक्षी हुई।

इसप्रकार प्रथमानुयोग ज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : करणानुयोग अज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है ?

उत्तर : जो जीव धर्म में उपयोग लगाना चाहते हैं, वे जीवों के गुणस्थान-मार्गणा आदि विशेष तथा कर्मों के कारण-अवस्था-फल किस-किसके कैसे-कैसे पाये जाते हैं इत्यादि विशेष तथा त्रिलोक में नरक-स्वर्गादि के ठिकाने पहिचानकर पाप से विमुख होकर धर्म में लगते हैं। ऐसे विचार में उपयोग रम जाये तब पाप-प्रवृत्ति छूटकर स्वयमेव तत्काल धर्म उत्पन्न होता है, उस अभ्यास से तत्त्वज्ञान की भी प्राप्ति शीघ्र होती है तथा ऐसा सूक्ष्म यथार्थ कथन जिनमत में ही है, अन्यत्र नहीं है; इसप्रकार महिमा जानकर जिनमत का श्रद्धानी होता है।

इसप्रकार करणानुयोग अज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : करणानुयोग तत्त्वज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है?

उत्तर : जो जीव तत्त्वज्ञानी होकर इस करणानुयोग का अभ्यास करते हैं, उन्हें यह उसके विशेषणरूप भासित होता है। इस अभ्यास से तत्त्वज्ञान निर्मल होता है तथा अन्य ठिकाने उपयोग को लगाये तो रागादिक की वृद्धि होती है और छद्मस्थ का उपयोग निरन्तर एकाग्र नहीं रहता, इसलिये ज्ञानी इस करणानुयोग अभ्यास में उपयोग को लगाता है।

इसप्रकार करणानुयोग तत्त्वज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : चरणानुयोग अज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है ?

उत्तर : जो जीव हित-अहित को नहीं जानते, हिंसादिक पाप कार्यों में ही तत्पर रहते हैं, उन्हें जिसप्रकार पाप कार्यों को छोड़कर धर्मकार्यों में लगें, उस प्रकार उपदेश दिया है, उसे जानकर जो धर्म आचरण करने को सन्मुख हुए, वे जीव गृहस्थधर्म व मुनिधर्म का विधान सुनकर आपसे जैसा सधे वैसे धर्म-साधन में लगते हैं।

इसप्रकार चरणानुयोग अज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : चरणानुयोग तत्त्वज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है?

उत्तर : जो जीव तत्त्वज्ञानी होकर चरणानुयोग का अभ्यास करते हैं, उन्हें यह सर्व आचरण अपने वीतरागभाव के अनुसार भासित होते हैं। एकदेश व सर्वदेश वीतरागता होने पर ऐसी श्रावकदशा-मुनिदशा होती है; क्योंकि इनके निमित्त-नैमित्तिकपना पाया जाता है। ऐसा जानकर श्रावक-मुनिधर्म के विशेष पहिचानकर जैसा अपना वीतरागभाव हुआ हो वैसा अपने योग्य धर्म को साधते हैं। वहाँ जितने अंश में वीतरागता होती है, उसे कार्यकारी जानते हैं, जितने अंश में राग रहता है, उसे हेय जानते हैं, सम्पूर्ण वीतरागता को परम धर्म मानते हैं।

इसप्रकार तत्त्वज्ञानी जीवों को चरणानुयोग प्रयोजनवान होता है।

प्रश्न : द्रव्यानुयोग अज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है ?

उत्तर : जो जीव जीवादिक द्रव्यों को व तत्त्वों को नहीं पहिचानते, आपको-परको भिन्न नहीं जानते, उन्हें हेतु-दृष्टांत-युक्ति द्वारा व प्रमाण-नयादि द्वारा उनका स्वरूप इसप्रकार दिखाया है, जिससे उनको प्रतीति हो जाये। उसके अभ्यास से अनादि अज्ञानता दूर होती है। अन्यमत कल्पित तत्त्वादिक झूठ भासित हों तब जिनमत की प्रतीति हो और उनके भाव को पहिचानने का अभ्यास रखें, तो शीघ्र ही तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो जाये।

इसप्रकार द्रव्यानुयोग अज्ञानी जीवों को प्रयोजनवान है।

प्रश्न : द्रव्यानुयोग तत्त्वज्ञानी जीवों को किसप्रकार प्रयोजनवान है ?

उत्तर : जिनके तत्त्वज्ञान हुआ हो वे जीव द्रव्यानुयोग का अभ्यास करें तो उन्हें अपने श्रद्धान के अनुसार वह सर्व कथन प्रतिभासित होते हैं। जैसे – किसी ने कोई विद्या सीख ली; परन्तु यदि उसका अभ्यास करता रहे तो वह याद रहती है, न करे तो भूल जाता है। इसप्रकार इसको तत्त्वज्ञान हुआ; परन्तु यदि उसके प्रतिपादक द्रव्यानुयोग का अभ्यास करता रहे तो वह तत्त्वज्ञान रहता है, न करे तो भूल जाता है अथवा संक्षेपरूप से तत्त्वज्ञान हुआ था, वह नाना युक्ति–हेतु–दृष्टांतादि द्वारा स्पष्ट हो जाये तो उसमें शिथिलता नहीं हो सकती। इस अभ्यास से रागादि घटने से शीघ्र मोक्ष सधता है।

इसप्रकार ज्ञानी जीवों को द्रव्यानुयोग प्रयोजनवान है।

प्रश्न : प्रथमानुयोग के व्याख्यान विधान के बिन्दु मात्र लिखिये।

उत्तर : (1) प्रथमानुयोग में जो मूल कथाएं हैं, वे तो जैसी हैं, वैसी ही निरूपित करते हैं। उनमें प्रसंगोपात्त व्याख्यान होता है, वह कोई तो ज्यों का त्यों होता है, कोई ग्रन्थकर्त्ता के विचारानुसार होता है; परन्तु प्रयोजन अन्यथा नहीं होता।

(2) प्रथमानुयोग में जिसकी मुख्यता हो उसी का पोषण करते हैं। जैसे – किसी ने उपवास किया, उसका तो फल अल्प था; परन्तु उसे अन्य धर्म परिणति की विशेषता हुई, इसलिये विशेष उच्चपद की प्राप्ति हुई, वहाँ उसको उपवासही का फल निरूपित करते हैं।

(3) प्रथमानुयोग में उपचाररूप किसी धर्म का अंग होने पर सम्पूर्ण धर्म हुआ कहते हैं। जैसे – जिन जीवों के शंका–कांक्षादिक नहीं हुए, उनको सम्यक्त्व हुआ कहते हैं।

(4) प्रथमानुयोग में कोई धर्मबुद्धि से अनुचित कार्य करे उसकी भी प्रशंसा करते हैं। जैसे–विष्णुकुमार ने मुनियों का उपसर्ग दूर किया सो धर्मानुराग से किया; परन्तु मुनिपद छोड़कर यह कार्य करना योग्य नहीं था; क्योंकि ऐसा कार्य तो गृहस्थधर्म में संभव है और गृहस्थधर्म से मुनिधर्म ऊँचा है; सो ऊँचा धर्म छोड़कर नीचा धर्म अंगीकार किया वह अयोग्य है; परन्तु वात्सल्य अंग की प्रधानता से विष्णुकुमारजी की प्रशंसा की है। इस छल से औरों को ऊँचा धर्म छोड़कर नीचा धर्म अंगीकार करना योग्य नहीं है।

प्रश्न : करणानुयोग के व्याख्यान विधान के बिन्दु मात्र लिखिये।

उत्तर : (1)जैसा केवलज्ञान द्वारा जाना वैसा छद्मस्थ के ज्ञानगोचर करणानुयोग में व्याख्यान है।

(2) यद्यपि वस्तु के क्षेत्र, काल, भावादिक अखंडित हैं; तथापि करणानुयोग में छद्मस्थ को हीनाधिक ज्ञान होने के अर्थ प्रदेश, समय, अविभाग –प्रतिच्छेदादिक की कल्पना करके उनका प्रमाण निरूपित करते हैं।

(3) करणानुयोग में जो कथन हैं वे कितने ही तो छद्मस्थ के प्रत्यक्ष–अनुमानादिगोचर होते हैं तथा जो न हों उन्हें आज्ञाप्रमाण द्वारा मानना।

(4) करणानुयोग में छद्मस्थों की प्रवृत्ति के अनुसार वर्णन नहीं किया है, केवल ज्ञानगम्य पदार्थों का निरूपण है।

(5) करणानुयोग में भी कहीं उपदेश की मुख्यता सहित व्याख्यान होता है, उसे सर्वथा उसी प्रकार नहीं मानना।

प्रश्न : चरणानुयोग में दो प्रकार से उपदेश किस प्रकार है ?

उत्तर : चरणानुयोग में छद्मस्थ के बुद्धिगोचर धर्म का आचरण जैसे हो सके वैसा व्यवहारनय की प्रधानता से उपदेश देते हैं, वह दो प्रकार से निम्नानुसार है –

एक तो व्यवहार ही का उपदेश और दूसरा निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश देते हैं।

जिन जीवों के निश्चय का ज्ञान नहीं है व उपदेश देने पर भी ज्ञान नहीं होता दिखायी देता ऐसे मिथ्यादृष्टि जीव कुछ धर्मसन्मुख होने पर उन्हें व्यवहार ही का उपदेश देते हैं।

जिन जीवों को निश्चय–व्यवहार का ज्ञान है व उपदेश देने पर उनका ज्ञान होता दिखायी देता है – ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव व सम्यक्त्वसन्मुख मिथ्यादृष्टि जीव उनको निश्चय सहित व्यवहार का उपदेश देते हैं। व्यवहार उपदेश में तो बाह्य क्रियाओं की ही प्रधानता है, उनके उपदेश से जीव पापक्रिया छोड़कर पुण्यक्रियाओं में प्रवर्तता है और निश्चय सहित व्यवहार के उपदेश में परिणामों की ही प्रधानता है।

प्रश्न : चरणानुयोग के व्याख्यान विधान के बिन्दु मात्र लिखिये।

उत्तर : (1) चरणानुयोग में तीव्र कषायों का कार्य छुड़ाकर मंदकषायरूप कार्य करने का उपदेश देते हैं। यद्यपि कषाय करना बुरा ही है, तथापि सर्व कषाय न छूटते जानकर जितने कषाय घटें उतना ही भला होगा – ऐसा प्रयोजन वहाँ जानना।

(2) चरणानुयोग में कषायी जीवों को कषाय उत्पन्न करके भी पाप को छुड़ाते हैं और धर्म में लगाते हैं। जैसे – पाप का फल नरकादि के दु:ख दिखाकर उनको भय कषाय उत्पन्न करके पापकार्य छुड़वाते हैं।

(3) चरणानुयोग में छद्मस्थ की बुद्धिगोचर स्थूलपने की अपेक्षा से लोकप्रवृत्ति की मुख्यता सहित उपदेश देते हैं।

प्रश्न : द्रव्यानुयोग के व्याख्यान विधान के बिन्दु मात्र लिखिये।

उत्तर : (1) जीवों के जीवादि द्रव्यों का यथार्थ श्रद्धान जिसप्रकार हो उस प्रकार विशेष, युक्ति, हेतु, दृष्टान्तादिक का यहाँ निरूपण करते हैं।

(2) द्रव्यानुयोग में निश्चय अध्यात्म–उपदेश की प्रधानता हो, वहाँ व्यवहारधर्म का भी निषेध करते हैं।

(3) द्रव्यानुयोग में भी चरणानुयोगवत् ग्रहण–त्याग कराने का प्रयोजन है, इसलिये छद्मस्थ के बुद्धिगोचर परिणामों की अपेक्षा ही वहाँ कथन करते हैं। इतना विशेष है कि चरणानुयोग में तो बाह्यक्रिया की मुख्यता से वर्णन करते हैं, द्रव्यानुयोग में आत्मपरिणामों की मुख्यता से निरूपण करते हैं।

प्रश्न : अनुयोगों की व्याख्यान पद्धति बताइये।

उत्तर : प्रथमानुयोग में तो अलंकार शास्त्र की व काव्यादि शास्त्रों की पद्धति मुख्य है; **करणानुयोग** में गणित आदि शास्त्रों की पद्धति मुख्य है; **चरणानुयोग** में सुभाषित नीतिशास्त्रों की पद्धति मुख्य है; **द्रव्यानुयोग** में न्यायशास्त्रों की पद्धति मुख्य है। **– संयोजक, पीयूष शास्त्री**

वैराग्य समाचार

बड़नगर–उज्जैन (म.प्र.) निवासी श्रीमती चन्दाबाई

काला का दिनांक 4 मार्च को 82 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। इस अवसर पर काला परिवार द्वारा विभिन्न संस्थाओं हेतु 2 लाख रुपये निकाले गये।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल का विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष 2017 में भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। यह उनकी 35वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा हेतु वहाँ के फोन, फैक्स एवं ई.मेल दिये जा रहे हैं, जहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के कार्यक्रमों का आयोजन 'जैन अध्यात्म अकेडमी ऑफ नॉर्थ अमेरिका' (**JAANA**) द्वारा किया जा रहा है। डॉ. भारिल्ल का नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	टोरंटो	**Gyanchand Jain G.C. Jain Investments Limited 276, Carlaw Ave. SUITE # 200 TORONTO, ONTARIO, CANADA, M4M-3LI Ph. 001-4164691109 E-mail : gyanjain@studioloft.com**	9 से 15 जून
2.	शिकागो	**Bipin Bhayani (O) 815-939-3190 (R) 815-939-0056 Tanmay Bhai +1-847-903-9511**	16 से 23 जून
3.	डलास	**Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net**	24 से 30 जून
4.	एडीसन (न्यूजर्सी)	**Dr. Hemant Bhai Shah Email-hemantshahmd@aol.com (M) 201-759-3202 Rajendra Jain Email - rajqmar@yahoo.com**	1 से 3 जुलाई (जैना कन्वेन्शन)
5.	न्यूजर्सी	**Atul Khara R : 972-8676535 O : 972-424-4902 C : 469-831-2163 Email - insty@verizon.net Himanshu Bhai +1-732-429-0055**	4 से 9 जुलाई (जाना शिविर)
6.	मुम्बई	**श्री अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल मो. 09821016988**	12 जुलाई

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम

डॉ. भारिल्ल की तरह ही उनके शिष्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर भी अनेक वर्षों से धर्मप्रचारार्थ विदेश भ्रमण कर रहे हैं। यह इनकी नौवीं विदेश यात्रा है। इनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

25 मई से 1 जून 2017 तक **Miami**, 2 से 11 जून तक **Dallas TX**, 12 से 16 जून तक **Orlando**, 17 से 23 जून तक **Raleigh**, 24 से 31 जून तक **Chicago**, 1 से 4 जुलाई तक **Edison NY (JAINA Convention)**, 4 से 9 जुलाई तक **New Jersey (JAANA Shivir)**

पं. विपिनजी शास्त्री का विदेश कार्यक्रम

पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर भी विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। इनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है -

9 से 15 जून 2017 तक **Dallas**, 16 से 22 जून तक **Cleveland**, 1 से 4 जुलाई तक **Edison NY (JAINA Convention)**, 4 से 9 जुलाई तक **New Jersey (JAANA Shivir)**, 9 से 13 जुलाई तक **Chicago**

क्या मृत्यु अभिशाप है ? : पुस्तक समीक्षा

डॉ.एस.पी.जैन (निदेशक-के.जे.सोमैया जैन अध्ययन केन्द्र, मुम्बई)

'क्या मृत्यु अभिशाप है' माननीय परमात्मप्रकाश भारिल्ल की कृति वास्तव में मृत्यु को अभिशापित होने से बचाने में कारगर कृति है। इसमें यथार्थ धरातल पर अनेकों सोपानबद्ध तर्कों और दृष्टांतों द्वारा मृत्यु को शोक का कारण बनने से बचाया गया है और इसे महोत्सव की संज्ञा से अभिभूषित किया गया है।

पुस्तक की एक और विशेषता है कि इसमें सभी बातें सप्रमाण और सोदाहरण स्पष्ट की गई है। वास्तव में कुछ नया सोचने को विवश करती है यह पुस्तक। मृत्यु के विषय में एक नया चिन्तन प्रस्तुत करती है यह पुस्तक। मृत्यु को धर्म और अध्यात्म से भी जोड़ती है यह पुस्तक।

मेरा मानना है कि यह कृति इतनी सरल भाषा और क्रमबद्ध दृष्टांतों से भरी है कि यह सभी जनसमुदाय के लिये अत्यंत लाभकारी है। इसमें किसी संप्रदाय विशेष की बात नहीं है। यथार्थ में मृत्यु एक अटल सत्य है। प्राचीन काल से ही ऋषि, मुनि, महर्षि आदि इस मृत्यु के रहस्य को पाने का भरसक प्रयास करते रहे हैं। साइंस भी आज इसके गर्भ में छिपे राज को जानने को आतुर है। आज के समय में यद्यपि मनुष्य के पास मृत्यु के बारे में चिन्तन करने का समय नहीं है तथापि ऐसा कौन है जो मृत्यु के भय से भयभीत नहीं है।

प्रस्तुत कृति मृत्यु के इस भय से निवारण करने का और मृत्यु के लिये सदैव खुशी-खुशी तैयार रहने का तरीका बताती है यह पुस्तक। मेरा मानना है कि यदि इसे गंभीरता से पढ लिया जाये तो वास्तव में मृत्यु का डर समाप्त हो जाता है और सदैव मृत्यु के लिये तैयार होना भी सहज ही सीखा जा सकता है। इस पुस्तक को तो आज सार्वभौमिक मान्यता के साथ रेलवे स्टेशनों और सार्वजनिक बाजारों की बुक स्टॉल्स पर भी पहुंचाया जाना चाहिये।

आज के समय में व्यक्ति के पास समय नहीं रह गया है और वह लम्बे उपन्यासों और कहानियों को नहीं पढना चाहता है। ऐसे समय में उसे ऐसी छोटी सी कृति ही आकर्षित कर पाती है। कृति का कवर पृष्ठ विषय के अनुरूप ही अत्यन्त आकर्षक है।

प्रकाशन तिथि : 28 मार्च 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com